अक्टूबर- 2024

दैनिक नैतिक प्रभात

बाल कहानी संग्रह

मिशन शिक्षण संवाद

दैनिक नैतिक प्रभात

(बाल कहानी संग्रह)

अनुक्रमणिका माह - अक्टूबर 2024

क्रमांक	बाल कहानी	लेखक का नाम	पृष्ठ संख्या
1	गिल्लू और कालू की दोस्ती	रचना तिवारी	1
2	पुरस्कार	शमा परवीन	2
3	सूझ-बूझ	अंजनी अग्रवाल	3
4	खुला अक्ल का ताला	सरिता तिवारी	4
5	भिखारिन	जुगल किशोर त्रिपाठी	5
6	पुरस्कार	अंजनी अग्रवाल	6
7	झूठ	शमा परवीन	7
8	मेहनत, किस्मत, खुशी	दीपक कुमार यादव	8
9	गोलू और मोलू	शमा परवीन	9
10	पश्चाताप के आँसू	मृदुला वर्मा	10
11	भूल का परिणाम	जुगल किशोर त्रिपाठी	11
12	शिकारी	शमा परवीन	12
13	समझदारी	शालिनी	13
14	उल्लू	शमा परवीन	14
15	हठ	दिव्या (छात्रा)	15
16	नेकी का फल	मृदुला वर्मा	16
17	भविष्य की चिन्ता	जुगल किशोर त्रिपाठी	17
18	दुनियादारी	।शालिनी	18
19	बहादुर बनो	शमा परवीन	19
20	मोर और पंख	अंजनी अग्रवाल	20
21	बड़ों की सीख	मृदुला वर्मा	21

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक - 01/10/2024
178
बाल कहानी

गिल्लू और कालू की दोस्ती

राजू के घर में एक बड़ा-सा बगीचा था, जिसमें एक गिलहरी रहती थी। राजू ने उस गिलहरी का नाम रखा गिल्लू। गिल्लू दिन-भर पेड़ों पर उछल-कूद करती रहती थी। राजू के घर में एक कुत्ता भी पला हुआ था। कुत्ते का नाम था कालू। कालू जब भी गिल्लू को देखता, उसके ऊपर झपटता और गिल्लू तेजी से दौड़कर कभी पेड़ पर चढ़ जाती।

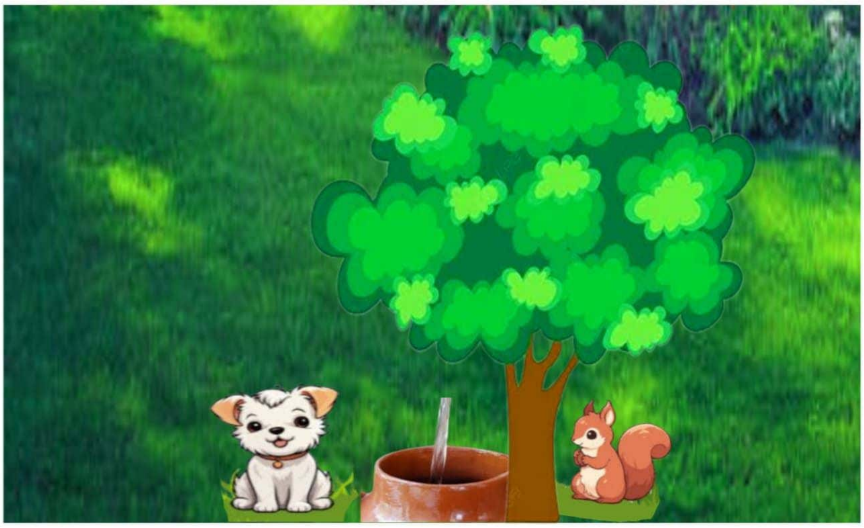

कभी छत पर चढ़ जाती। राजू कालू और गुल्लू की शैतानी देखकर खुश होता। गर्मियों के दिन थे। एक दिन राजू गिल्लू के पास बगीचे में पानी रखना भूल गया। गिल्लू को जोर से प्यास लगी थी। वह कभी बगीचे में दौड़ती, कभी पेड़ पर चढ़ती और कभी छत पर चढ़ती तथा जोर-जोर से आवाज निकालती।

कालू भी बगीचे में घूम रहा था। गिल्लू को प्यासा देख कालू राजू के पास आया और गुल्लू के पानी वाले बर्तन के पास राजू को ले गया। पानी का बर्तन सूखा पड़ा हुआ था। राजू ने तुरन्त बर्तन में पानी भरा। गिल्लू ने पानी पिया और फिर कालू गिल्लू की तरफ दौड़ा और गिल्लू कालू को चिढ़ाते हुए दौड़कर पेड़ पर चढ़ गयी। गिल्लू और कालू का यह खेल देखकर राजू हँसने लगा।

संस्कार सन्देश~

हमें पशु-पक्षियों की मदद कर उनके खाने-पीने का ध्यान रखना चाहिए।

कहानीकार~
रचना तिवारी (स०अ०)
प्रा० वि० ढिमारपुरा पुनावली कलां (रक्सा), झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 03-10-2024
179

बाल कहानी

पुरस्कार

"माँ! ये देखिए- मैंने कागज से घर बनाया है। कल क्राफ्ट वर्क है। मैं जाकर मैंम को दिखाऊँगा, फिर मुझे पुरस्कार मिलेगा। मेरी मैंम ने बताया था कि सब लोग घर से बनाकर लाना। जिसका सबसे अच्छा होगा, उसे पुरस्कार मिलेगा। माँ! आप बतायें, ये घर अच्छा बना है कि नहीं?"

"बहुत अच्छा बना है सोनू बेटा! ये तुम्हारा घर.. अब मुँह-हाथ धोकर खाना खा लो। जबसे स्कूल से तुम आये हो, तब से इसे ही बना रहे हो। रात हो गयी है, अब खाना खाकर सो जाओ।"

"ठीक है माँ! आप खाना लगा दीजिए.. मैं मुँह-हाथ धोकर आता हूँ, पर माँ! ये तो बतायें कि इसे मैं कहाँ रख दूँ? जिससे ये घर सुरक्षित रहे क्योंकि कल सुबह ही इस घर को स्कूल ले जाना है।"

"तुम फिक्र न करो बेटा! मैं इसे अलमारी में रख देती हूँ। जब तुम स्कूल जाने लगोगे, तब मैं अलमारी से निकाल कर दे दूँगी।"

सोनू जल्दी से मुँह-हाथ धोकर खाना खाने बैठ जाता है। खाना खाने के बाद सोनू सो जाता है।

सुबह उठते ही तैयार होकर अपने हाथ से बनाये हुए घर को लेकर स्कूल की ओर खुशी-खुशी चल पड़ता है। रास्ते में उसे उसका दोस्त मोनू मिल जाता है वह सोनू से कहता है, "दोस्त! तुम थक गये होगे। लाओ! मैं इस खूबसूरत घर को अपने हाथ में ले लेता हूँ। मैंने भी बनाया है, पर वो मेरे बैग में है। तुम्हे स्कूल पहुँचकर दिखाऊँगा।"

दोनों बातें करते-करते स्कूल के अन्दर दाखिल हो जाते हैं। मोनू के हाथ में सोनू का घर है। सभी लोग घर देखकर मोनू की तारीफ करने लगते हैं। मोनू सबको 'धन्यवाद' बोलने लगता है। इससे पहले कि सोनू सच्चाई बताने का प्रयास करता, मोनू जल्दी से मैंम के हाथ में घर देकर अपना नाम बता देता है और कहता है, "मैंने बहुत मेहनत से इसे बनाया है।"

सोनू ये सब देखकर बहुत दुःखी होता है और रोने लगता है, पर कुछ बोल नहीं पाता है। कक्षा में सोनू को डाँट भी पड़ती है कि एक तो तुम बनाकर नहीं लाये, ऊपर से रो रहे हो, फिर भी सोनू कुछ कह नहीं पाता है। कुछ देर बाद मोनू को पुरस्कार मिल जाता है। वह खुशी में झूम उठता है।

इसके बाद खेल के पीरियड में सोनू चुपचाप एक किनारे बैठ जाता है। मोनू उसी के सामने कुछ मित्रों के साथ हँस-हँस कर फुटबाल खेलने लगता है। मोनू फुटबॉल खेलते समय अचानक गिर जाता है। उसके पैर से खून निकलने लगता है। मोनू के गिरते ही सभी मित्र हँसने लगते है, तभी सोनू दौड़कर मोनू को उठाता है।

उसके पैर से खून निकलता देखकर वह जोर से चिल्लाकर सभी टीचर्स को बुलाता है। टीचर्स आकर मोनू को प्राथमिक चिकित्सा से उपचार करते हैं।

सोनू का अपनापन देखकर मोनू पश्चाताप के आँसू रोने लगता है और सोनू को गले लगाकर माफ़ी माँगता है और खुद ही सभी टीचर्स को बता देता है कि जो पुरस्कार आज मैंने पाया, वह छल करके पाया है। सच्चाई जानकर सभी आश्चर्यचकित हो जाते हैं। सच्ची भावना से मोनू के माफी माँगने पर सभी मोनू को माफ कर देते हैं।

सोनू को पुरस्कार मिल जाता है, सोनू बहुत खुश हो जाता है। घर आकर माँ से अपनी खुशी बताता है। माँ गले लगाकर सोनू की खुशी दोगुना कर देती है।

संस्कार सन्देश

सच्चाई में बहुत ताकत होती है वह किसी न किसी प्रकार से सामने आ ही जाती है।

लेखिका

शमा परवीन
बहराइच (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 04-10-2024
180
बाल कहानी

सूझ-बूझ

एक जंगल में एक गिलहरी और चिड़िया रहते थे। गिलहरी और चिड़िया बहुत अच्छे मित्र थे। जंगल में बहुत सारे जानवर दिन-भर इधर-उधर टहलते रहते और शोर मचाया करते थे। कभी-कभी तो आपस में चिल्ला-चिल्लाकर लड़ाई भी करते रहते थे।

एक दिन चिड़िया गिलहरी से बोली, "शहर में ये जानवर नहीं होते हैं तो इन लोगों का शोर नहीं होता है।" गिलहरी बोली, "तुम्हें ये कैसे पता?"

चिड़िया बोली, "अरे मित्र! मैं तो उड़ते-उड़ते सब जगह जाती हूँ न, तो मुझे सब पता है।"

गिलहरी बोली, "अब तो मैं शहर में जाकर ही रहूँगी।" चिड़िया ने समझाया, "बहन! वहाँ पर जीवन इतना आसान नहीं है।" लेकिन गिलहरी नहीं मानी और शहर में जाकर रहने लगी। जब चिड़िया उसके पास आती तो दोनों खूब मजे से खेलते, खूब मस्ती भी करते। गिलहरी शहर में आकर बहुत खुश थी।

अचानक एक दिन बहुत तेज पानी बरसा और गिलहरी का घर उस पानी में टूटकर बह गया। साथ ही गिलहरी भी पानी के बहाव के साथ बहने लगी क्योंकि वहाँ पर कोई भी पेड़ नहीं था। अचानक चिड़िया उड़ते-उड़ते आयी और सब देखा। उसे अपनी मित्र की बहुत चिन्ता हुई। चिड़िया ने अपनी सूझ-बूझ का प्रयोग करते हुए जल्दी से जाकर एक लकड़ी की टहनी लाकर पानी में डाल दी। अब उस लकड़ी के सहारे गिलहरी पानी से बाहर आ गयी। गिलहरी को अपनी गलती का अहसास हुआ कि पेड़ों के बिना जीवन नहीं हैं और वह जंगल में पेड़ों के बीच रहने लगी।

संस्कार सन्देश

हमें हमेशा एक-दूसरे का सहयोग करना चाहिए। इसकी शिक्षा हमें हमारे गुरुजनों और बड़ों से लेनी चाहिए।

लेखिका

अंजनीअग्रवाल (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० सेमरुआ,
सरसौल (कानपुर नगर)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक - 05.10.2024
181

बाल कहानी — खुला अक्ल का ताला

एक बार की बात है, रमन, गगन, राजू, माला, मोहन और यथार्थ पड़ोस के गाँव में मेला देखने गये। मेला था तो ठेला भी था और ठेले पर तरह-तरह के सामानों का रेला था। ये सारे बच्चे पहली-पहली बार घर से समूह में मेला देखने निकले थे। रास्ते में हँसी-ठिठोली करते हुए सब मेले पहुँच गये। मेले की चकाचौंध सबको खूब भा रही थी। रमन ने समोसे, पकौड़ी और जलेबी की दुकान पर जाकर उसका आनन्द उठाया, तो गगन ने चाउमीन तथा बर्गर का। माला ने टिकिया-पकौड़ी छककर खायी। राजू , मोहन और यथार्थ ने सबसे पहले पानी-फुल्की खायी और में संग टिकिया भी खूब उड़ायी। सभी ने अपनी-अपनी पसन्द के झूले भी झूले तथा अपनी पसन्द और जरूरत के हिसाब से कुछ खेल-खिलौंने भी खरीदे।

सूर्यदेव अस्ताचल की ओर उन्मुख हो रहे थे। मेले की भीड़ अपने-अपने घरों की ओर वापस हो रहे थी। सभी बच्चे भी अपने घर की ओर चल पड़े। रास्ते में ही राजू के पेट में दर्द और मरोड़ उठने लगा तथा उल्टी भी आने लगी। घर पहुँचते- पहुँचते राजू की हालत खराब हो गयी। उसके पापा तो काम से अभी घर वापस नहीं लौटे थे, इसलिए उसकी माँ पड़ोस के डॉक्टर के यहाँ ले गयी। डाक्टर ने कहा कि, "अरे! इस बच्चे को तो कालरा हो गया है। इसने कहीं दूषित पानी पीया है और बासी भोजन किया है।" माँ ने कहा- "यह दोस्तों के साथ मेला गया था। वहीं पर चीजें खायी है।" डॉक्टर बोला- "घबराइए बिल्कुल नहीं! आपका बच्चा एकदम ठीक हो जायेगा।" डॉक्टर ने कुछ औषधियाँ दी और कुछ सावधानियाँ बतायी, जिसका राजू ने पालन किया और स्वस्थ हो गया। अब जब भी वह मेला, बाजार जाता है, तो कुछ भी खाने-पीने से पहले साफ-सफाई और शुद्धता जरूर देखता है और सबको इसके बारे में बताता भी है।

संस्कार सन्देश

हमें अपने खान-पान की परख करके ही उनका प्रयोग करना चाहिए।

लेखिका
सरिता तिवारी (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय कन्दैला,
मसौधा (अयोध्या)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।
shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दिनांक -07.10.2024
182

दैनिक नैतिक प्रभात

बाल कहानी

भिखारिन

प्रवीण अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र था। उसके माता-पिता उसकी हर जरूरतें पूरी करते थे। वह उसे हमेशा अच्छे संस्कार और अच्छी शिक्षा देते थे। एक दिन वह अपने मित्रों के साथ बाहर घूमने गया। वहाँ उसने देखा कि कुछ लोग एक भिखारिन को परेशान कर रहे थे। प्रवीण ने यह सब देखा तो उसे बहुत बुरा लगा और साथ ही उन लोगों पर क्रोध भी आया। वह तुरन्त आगे बढ़ा और भिखारिन से बोला, "दादी! चलो, घर चलें। मैंने तुम्हें कहाँ-कहाँ नहीं ढूँढा। तुम यहाँ हो!" सभी लोग उसकी बातें सुनकर आश्चर्यचकित हो गये। प्रवीण ने कहा, "चौंकते क्यों हो, क्या इनमें तुम सबको अपनी माँ और दादी नहीं दिखाई देती?" सभी लोग चुप थे। प्रवीण पुनः बोला, "हमें हमेशा औरतों का सम्मान करना चाहिए। आप लोग इसे भिखारिन समझ कर इसका अपमान कर रहे हैं। आप सबको तो इसकी सहायता करनी चाहिए।" वह औरत बोली, "ईश्वर न करे, कल आपके घर की कोई औरत मेरी जैसी हालात् में हो और उसकी मदद करने की वजाय लोग उसकी हँसी उडायें।" "चलो माँ घर चलें।" इतना कहकर प्रवीण उस बूढ़ी औरत का हाथ पकड़कर ले जाने लगा। सभी लोग शर्म से अपने-अपने सिर झुकाये वापस लौट गये। प्रवीण जैसे ही उस बूढ़ी औरत के साथ अपने घर पहुँचा तो उसकी माँ ने पूछा, "ये कौन हैं?" "माँ! आप कहती थी न कि अब मुझसे काम नहीं होता है। इसलिए मैं इन्हें ले आया हूँ। इनका अपना कोई नहीं है। लोग इसे भिखारिन समझ कर परेशान कर रहे थे।" प्रवीण की बात सुनकर माँ बोली, "आज मुझे पता चला कि मेरा बेटा बड़ा हो गया है। बेटा! ये तुमने बहुत अच्छा काम किया है। आज से यह हमारे घर में ही रहेगी।" यह सुनकर उस बूढ़ी औरत की आँखों में आँसू आ गये। वह बोली, "तुम सब जुग-जुग जियो! खूब लोकप्रिय होकर उन्नति करो। फले-फूले रहो! मैं तो यही समझती थी कि मेरा जीवन यों ही राहों में भटकते-भटकते बीतेगा। ईश्वर तेरा लाखों-लाख धन्यवाद! ऐसे बेटे तू सभी को दे।" उसी समय प्रवीण के पिताजी भी आ गये और जब उन्होंने सब हाल जाना तो वह अपने बेटे पर बहुत प्रसन्न हुए। वह बोले, "माँ! अब आप यहीं रहेंगी।" बूढ़ी औरत हाथ जोड़े खड़ी थी। वह कभी ईश्वर को धन्यवाद देती और कभी इन लोगों को। वह सोच रही थी, एक वो लोग हैं और एक ये लोग हैं।

संस्कार सन्देश

हमें हमेशा असहाय लोगों पर हो रहे अत्याचार का विरोध करना चाहिए और जितनी हो सके, उनकी मदद करनी चाहिए।

कहानीकार-
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मेरा मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान
मिशन शिक्षण संवाद
शिक्षक का सम्मान

shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक -08.10.2024
183
बाल कहानी

पुरस्कार

मोनू की दादी की अचानक तबीयत खराब हो जाती है। मोनू अपनी दादी को बहुत प्यार करता हैं। उनकी तबियत खराब हो जाने के कारण वह बहुत उदास रहने लगता है। उसके दादा जी उसकी दादी का बहुत इलाज करवाते हैं लेकिन किस्मत को कुछ और मंजूर था और दादी का स्वर्गवास हो जाता है।

मोनू के दादा जी मोनू को बहुत समझाते हैं लेकिन मोनू का अब पढ़ाई में भी मन नहीं लगता है। वह सदैव उदास-उदास सा रहता है। मोनू के मम्मी-पापा पहले ही नहीं थे। बस चाचा-चाची, दादा जी और दादी ही थे। अब तो दादी भी नही रहीं। मोनू के चाची-चाचा उसे प्यार नहीं करते थे। यहाँ तक कि उसके दादा जी को भी पसन्द नहीं करते थे। सदैव उनका तिरस्कार किया करते थे। तभी मोनू के दादा जी ने मोनू का दाखिला नवोदय विद्यालय में करवा दिया। समय बीता और पढ़ाई पूरी करने के बाद जल्द ही मोनू बहुत बड़ा अधिकारी बन गया।मोनू के दादा जी को बुलाकर सम्मानित किया गया। अब उनके पास धन और शोहरत की कमी न रही। अचानक एक दिन चाचा-चाची आये और बोले, "बेटा! कल तो तुम्हारा जन्मदिन है! क्या पुरस्कार लोगे?" मोनू बोला,"चाचा, चाची जी मुझे किसी पुरस्कार की आवश्यकता नहीं है। मेरे पास दादीजी और दादा जी के आशीर्वाद से सब कुछ है।" चाचा जी बोले, "बेटा! फिर भी हम अपनी खुशी से तुम्हें कुछ देना चाहते हैं।" मोनू से सिर झुकाकर उत्तर दिया, "अगर आप मुझे सच में कुछ देना चाहते हैं तो मुझे बहुत प्यार दें और मेरे दादा जी की सदैव इज्जत और आदर सत्कार करें, यही मेरा पुरस्कार हैं।" चाचा-चाची समझ गये और अपनी गलती के लिए उन लोगों से माफी भी माँगी।

संस्कार सन्देश

हमें सदैव अपने से बड़ों की इज्जत और आदर करना चाहिए।

कहानीकार-
अंजनी अग्रवाल (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सेमरुआ,
सरसौल, कानपुर नगर

shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दिनांक 09-10-2024
दैनिक नैतिक प्रभात
184

बाल कहानी

झूठ

टिंकू, पिंकू और सोनू मेला देखने पास के गाँव में बातें करते हुए जा रहे थे। पिंकू ने टिंकू से कहा, "मेरे पास सिर्फ पाँच रुपए है। तुम्हारे पास कितने रुपए है?"
"क्यों?"
"क्यों क्या? हम लोग मेला जा रहे रहे हैं। बिना पैसे के मेला कैसे घूमेंगे?"
टिंकू उदास होकर बोला, "कह तो तुम सही रहे हो, पर मित्र! मेरे पास सिर्फ एक-एक रुपए के तीन सिक्के है, मतलब
सिर्फ तीन रुपए।"
"ओह! फिर कैसे हम लोग मेला घूमेंगे?"

तभी सोनू बोला, "तुम लोग फिक्र न करो! मेरे पास बहुत रुपए है। तुम दोनों को खूब खिलाऊँगा और जो कहोगे, वह मेले में दिखला दूँगा। अगर कुछ चीजे पसन्द आयीं तो उसे दिला भी दूँगा।"
सोनू की बात सुनकर टिंकू और पिंकू बहुत खुश हो गये। खुशी के मारे तेज गति से तीनों मेला जा पहुँचे। मेला का दृश्य बहुत सुन्दर था। चारों तरफ दुकानें सजी थी। बड़े-बड़े झूले लगे थे। सर्कस और जादू-शो भी लगा था। एक से बढ़कर एक चीजें दुकानों में सजी थी। खाने-पीने की चीजें बहुत थीं।
इससे पहले टिंकू, पिंकू कुछ कहते, सोनू बोला, "मित्र! तुम दोनों अपने-अपने पैसे निकालो। मैं उसमें और रुपए मिलाकर सर्कस का टिकट और खाने-पाने की चीजें लाता हूँ, फिर हम लोग मजे से सर्कस देखेंगे।"
पिंकू ने अपने पाँच रुपए, टिंकू ने भी अपने तीन रुपए सोनू को दे दिए।
सोनू बोला, "टिकट के पास बहुत भीड़ है। तुम लोग यहीं रुको, मैं लेकर आता हूँ। टिकट के साथ खाने-पीने की चीजें भी लाता हूँ। बस! मैं यूँ गया और यूँ आया, जब-तक तुम लोग यहीं रहो।"
ये कहकर सोनू चला गया। देखते ही देखते चन्द मिनटों में ही टिंकू और पिंकू की आँखों के सामने सोनू छू-मन्तर हो गया।
काफी इन्तज़ार करने के बाद भी सोनू वापस नहीं आया। टिंकू और पिंकू ने सोनू को बहुत खोजा, पर वह कहीं नहीं मिला। टिंकू को सोनू की बहुत फिक्र हुई कि कहीं सोनू किसी मुसीबत में तो नहीं फँस गया, पर पिंकू को समझ आ गया कि सोनू ने झूठ बोलकर हमारे पैसे लिए और नौ-दो ग्यारह हो गया।
समय ज्यादा होता जा रहा था। इससे पहले कि रात हो जाये और घर पर डाँट पड़े, टिंकू और पिंकू ने समझदारी से काम लिया और दोनों थक-हारकर अपने-अपने घर की ओर चल दिए।

संस्कार सन्देश

हमें अपने स्वार्थ के लिए झूठ बोलकर किसी का यकीन नहीं तोड़ना चाहिए।

लेखिका

शमा परवीन
बहराइच (उत्तर प्रदेश)

shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 10-10-2024
185

बाल कहानी — मेहनत, किस्मत, खुशी

रात हो चुकी थी लेकिन आज भी बुधिया के मुख को अन्न का दाना नसीब न हुआ था। वह बच्चों को आधा पेट ही खिला पाई थी। कुछ ही दिनों की ही तो बात है, डेंगू की बीमारी में पति बुधई ने तड़प-तड़प कर प्राण त्याग दिए थे। निष्ठुर गरीबी के चलते ठीक से पति का इलाज भी न वह करा सकी।
आसमान में चाँद को निहारते हुए सोचने लगी कि मेरा पति पहले रिक्शा चलाकर ठीक-ठाक पैसे कमाकर लाता था और बच्चे भी अच्छे से पास के सरकारी पाठशाला में पढ़ रहे थे। निगोड़ी जिन्दगी ने ऐसी करवट ली कि शहर में ऑटो रिक्शा आ गये और पति की कमाई से अब घर न चल पाया।

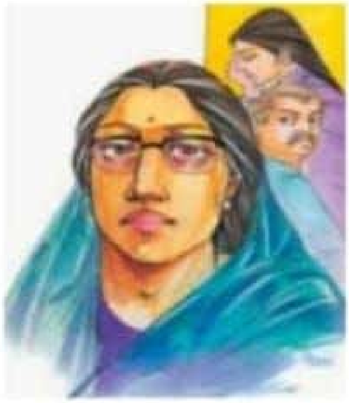

कुछ दिन तक बचाये हुए पैसे से गुजर-बसर चलता रहा, लेकिन कब तक चलता। अचानक पति बुधई बीमार हुए और घर का पाई-पाई इलाज में चला गया, फिर भी पति काल के गाल में चले गये। दो बेटियाँ विमला आठ वर्ष और कमला छः वर्ष और पुत्र अजय चार वर्ष की जिम्मेदारी अब बुधिया के ऊपर आ गयी। इसी उधेड़बुन में वह खोयी ही थी कि सोचते-सोचते नींद आ गयी।
सुबह हुई तो सूरज माथे पर आ चुका था। बच्चे भूख से बिलख रहे थे। बुधिया ने फैसला किया कि अब गाँव में गुजारा न हो सकेगा। शहर जाकर लोगों के घर का चौका-बर्तन करके वह बच्चों का पेट पालेगी।
पड़ोसियों से कुछ पैसे उधार लेकर बुधिया गाँव से शहर की ओर चल पड़ी। जल्द ही उसे एक घर मिल गया जो उसे नौकरी देने पर राजी हो गया। इस तरह थोड़े ही दिनों में जीवन की गाड़ी पटरी पर चल पड़ी। बच्चे पढ़ाई करने लगे और बुधिया उन्हें पढ़ाने लगी। दोनों बेटियाँ धीरे-धीरे बड़ी होने लगी। उन्होंने माँ से कहा कि, "माँ! वह भी पास के बच्चों को पढ़ाकर अपनी पढ़ाई भी करेंगी। इस तरह से कुछ पैसे भी घर में आ जायेंगे।"
समय का चक्र चलता गया और कठिन परिश्रम और लगन के बल पर आज उसकी तीनों सन्तानें संघर्ष-पथ पर चलकर आज उस मुकाम पर खड़ी थी, जहाँ से उनके संघर्षों को याद किया जाता।
आज बीस वर्ष बीत चुके हैं। बुधिया के चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ चुकी हैं। आँखों से धुँधला दिखने लगा है। वर्षों से इन आँखों ने अपने बच्चों का संघर्ष देखा है। अब वह घड़ी आ चुकी है, जिसका उसे बेसब्री से इन्तजार था। आज सुबह अचानक तेज बुखार आया, देह ताप से जल रही थी। दोपहर में दरवाजे पर मीडिया के साथ तीनों पुत्र -पुत्रियों का प्रवेश होता है, जिन्होंने आई०ए०एस० परीक्षा उत्तीर्ण कर अपनी माँ को खुशी देने का मन बनाया था।
कमरें में एक साथ माँ को पुकारते हुए सभी की दस्तक होती है लेकिन माँ की कोई आहट नहीं मिलती है। बिस्तर पर आकर जब अजय माँ को झकझोरता है तो कोई हलचल नहीं होती। बुधिया का शरीर निष्प्राण हो चुका था। उसे यह खुशी नसीब नहीं थी। देह ठण्डी हो चुकी थी। सबने कहा कि, "अब इस शरीर को उठाया जाय।" सभी की आँखों से आँसू बह रहे थे।

संस्कार सन्देश

निःसन्देह मेहनत से किस्मत बदलती है, किन्तु यह भी सच है कि खुशी भी किस्मत से मिलती है।

कहानीकार

दीपक कुमार यादव (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय मासाडीह,
महसी, बहराइच (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक -14-10-2024
186

बाल कहानी — गोलू और मोलू

गोलू और मोलू आपस में खेल रहे थे। गोलू ने मोलू से कहा, "चलो, आज हम दोनों मिट्टी से कोई चित्र बनाते हैं। जो अच्छा बनायेगा, वह जीत जायेगा।" देखते ही देखते गोलू ने खूब अच्छा-सा, सुन्दर-सा एक चित्र बनाया। मोलू ने बहुत कोशिश की पर कोई चित्र बना नहीं पाया। जब मोलू ने देखा कि गोलू का चित्र बहुत सुन्दर है तो उसे शरारत सूझी। इससे पहले कि वह कुछ शरारत करता, गोलू बोल उठा, "देखो मोलू! मैंने एक प्यारा सा चित्र बनाया है। ये पेड़ है। ये नदी है और ये पहाड़ है। बोलो, तुम्हें कैसा लगा मेरा बनाया हुआ ये प्राकृतिक चित्रण?"
"बहुत अच्छा चित्र बना है।" इतना कहकर मोलू ने झट से सारा चित्र मिटा दिया। गोलू को गुस्सा आ गया। गोलू ने मोलू को इस बात पर एक थप्पड़ मार दिया। फिर दोनों आपस में लड़ने लगे। गोलू रोने लगा। रोते-रोते वह अपने अभिभावक के पास जा पहुँचा। अभिभावक बिना सोचे-समझे मोनू के घर जा पहुँचे। फिर दोनों अभिभावक के बीच लड़ाई-झगड़ा शुरू हो गया। थोड़ी देर तो गोलू, मोलू खड़े रहे, फिर उसके बाद दोनों चुपके से फिर उसी मैदान में जा पहुँचे और फिर से दोनों मिट्टी में चित्र बनाने लगे।

एक व्यापारी यह सब देख रहा था। उसने कहा, "आप लोग आपस में किस बात के लिए लड़ रहे हैं?" गोलू की माँ ने कहा, "इसके बच्चे ने मेरे बच्चे को मारा। आप इनसे पूछें, क्यूँ मारा मेरे गोलू को?" इस पर वह व्यापारी बोला, "आप लोग जिस बच्चे के लिए लड़ाई कर रहे हैं, वे दोनों बच्चे आपस में फिर वही खेल खेल रहे हैं, जिस खेल के लिए उन्होंने लड़ाई की थी। मैं अभी स्वयं देखकर आया हूँ। अगर आपको यकीन न हो, तो चलो मेरे साथ। आप लोगों को भी दिखा दूँ।" सभी लोग चल दिए। जब दोनों के अभिभावक बच्चों के पास पहुँचे तो आश्चर्यचकित हो गये। गोलू, मोलू हँस-हँसकर बातें कर रहे थे। वे चित्र बनाने में इतना व्यस्त थे कि उन्होंने अपने माता-पिता के आने की आहट भी नहीं सुनी और न ही पलटकर देखा। ये सब देख दोनों बच्चों के अभिभावक बहुत शर्मिन्दा हुए। वह बच्चों को बिना कुछ कहे अपने घर की ओर चल दिए। शायद उन्हें अपनी गलती का एहसास हो गया था। गोलू, मोलू जब घर वापस आये तो बड़ों ने समझाया कि, "शरारत और लड़ाई अच्छी बात नहीं है। आज अनहोनी होते-होते टली है।" गोलू और मोलू को एहसास हुआ कि शरारत और लड़ाई से सिर्फ नुकसान होता है।

संस्कार सन्देश-

हमें हर स्थिति में धैर्य धारण करना चाहिए।

रचना
शमा परवीन
बहराइच (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 15/10/2024
187

बाल कहानी

पश्चाताप के आँसू

रविवार का दिन था। रानी घर के आँगन में खेल रही थी और पापा अखबार पढ़ रहे थे। मम्मी रसोई घर में खाना बना रही थी। घर के बरामदे में चिड़िया का घोंसला था। घोंसले में उसके दो बच्चे थे। चिड़िया के आने पर वे चीं-चीं करने लगते थे। रानी एकटक उनको देख रही थी, तभी पापा की नजर रानी पर पड़ी। वे बोले, "रानी क्या देख रही हो?"

रानी बोली, "पापा! यह चिड़िया क्या कर रही है?"

पापा ने कहा, "बेटा! चिड़िया बड़े प्यार से बच्चों की चोंच में दाना खिला रही है। चिड़िया उनकी देखभाल तब तक करती है, जब तक भी बड़े नहीं हो जाते। बच्चे और बुजुर्गों को विशेष देखभाल और प्यार की जरूरत होती है।"

तभी अचानक कमरे से चिल्लाने की आवाज आती है। माँ दादी पर चिल्ला रही थी। उन्हें भला-बुरा कह रही थी। रानी तुरन्त उन्हें ऐसा करने से रोकती है और माँ को पापा की पूरी बात बताती है। यह सुनकर माँ की आँखों में आँसू आ जाते हैं। वह दादी से अपने बुरे व्यवहार के लिए क्षमा माँगती हैं और कभी भी इस तरह का व्यवहार न करने की कसम खाती हैं, और फिर सभी मिलजुल कर प्रेम से रहते है।।

संस्कार सन्देश-

इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें बुजुर्गों का आदर और सम्मान करना चाहिए।

कहानीकार-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
ब्लॉक-अमरौधा (कानपुर देहात)

शिक्षा का उत्थान मिशन शिक्षण संवाद शिक्षक का सम्मान

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 16-10-2024
188

बाल कहानी

भूल का परिणाम

एक बार मोहन अपने मित्रों के साथ पास के ही एक बाँध पर पिकनिक मनाने गया। वहाँ पर मेला लगा हुआ था। मोहन ने अपने मित्रों के साथ मेला देखा और मेले में जलेबियाँ खायी। फिर उन सबने चाट का आनन्द लिया। इसके बाद मोहन और उसके मित्र बाँध पर घूमने गये। वहाँ मोहन अपने मित्रों के साथ एक बड़ी चट्टान पर बैठ गया। मोहन ने अपने मित्रों से कहा कि, "हम सबने आज खूब मेला घूमा। जलेबियाँ भी खायीं और चाट का आनन्द लिया। यहाँ आकर बाँध का सुन्दर और मनोरम दृश्य भी देखा, किन्तु...।" यह कहते-कहते मोहन रुक गया। तभी उसके मित्र सुरेश ने पूछा कि, "मित्र मोहन! कहते-कहते क्यों रुक गये, बताओ, अब कौन-सी इच्छा शेष रह गयी है? वह भी पूरी की जायेगी।"

मोहन बोला-, "सुरेश! बाँध से निकलता हुआ यह पानी कितना प्यारा लग रहा है! यह उछल-उछलकर ऊपर उठ-गिरकर कितनी तेजी से आगे बढ़ रहा है। मन करता है, इस पानी की लहरों के साथ खेलूँ और इसमें नहाऊँ।" तभी मोहन के दूसरे मित्र रमेश ने कहा, "बस! इतनी सी बात! मन तो मेरा भी यही कर रहा है।" सुरेश बोला, "कहीं अगर गहराई हुई तो..?" मोहन बोला, "उसकी चिन्ता तुम सब मत करो..मैं गहरे पानी में तैरना जानता हूँ। चलो..।" फिर क्या था, मोहन के साथ सभी उठ खड़े हुए और पानी की ओर चल दिए। मोहन का एक मित्र सोहन भी वहाँ उपस्थित था। वह अपनी जगह बैठा रहा। सबने जाते समय उससे पूछा, "तुम क्यों गुमसुम बैठे हो, क्या तुम्हें नहाने नहीं जाना है?" उसने साफ मना कर दिया-, "तुम लोग जाओ, मुझे पानी से बहुत डर लगता है।" मोहन बोला, "तो तुम घर पर नहाते भी न होगे?" मोहन की बात सुनकर सुरेश और रमेश हँसने लगे और बोले, "डरपोक कहीं का..ठीक है, तू यहीं बैठा रह! अगर बीच में मन करे तो आ जाना।" यह कहकर मोहन, सुरेश और रमेश अपने-अपने कपड़े उतारकर पानी में नहाने चले गये। वे तीनों पानी में नहाने लगे और सोहन बड़े ध्यान से उनको देख रहा था। तीनों पानी में उछल-कूद करते और आनन्द मना रहे थे। ऐसा करते उन्हें पता ही नहीं चला कि वे कब गहराई में चले गये। गहराई में जाते ही वे तीनों डूबने लगे और तैरने की कोशिश करने लगे। सोहन को समझते देर न लगी, वह तुरन्त उठकर कुछ दूरी पर नहा रहे लोगों के पास पहुँचा और बोला, आप लोग जल्दी आइये, मेरे तीनों मित्र पानी में डूब रहे हैं।" सोहन की बात सुनकर कुछ लोग तुरन्त पानी से बाहर आये और बोले, "कहाँ हैं?" सोहन ने डूब रहे अपने मित्रों की तरफ इशारा किया। वे लोग तुरन्त उस दिशा में भागे और सोहन के तीनों मित्रों को बचाने पानी में कूद पड़े। उन लोगों ने बड़ी मेहनत करके उन तीनों को पानी से बाहर निकाला। उन तीनों की साँसें फूल चुकी थीं। कुछ देर आराम करने के बाद वह सामान्य रूप से साँस लेने लगे। उन लोगों ने सोहन के तीनों मित्रों को बहुत डाँटा और कहा, ईश्वर का लाख-लाख धन्यवाद, जो तुम तीनों बच गये। यहाँ आकर आज तक कोई जीवित नहीं बचा है। तुम लोग अपने इस मित्र के कारण बच गये। अगर ये भी तुम्हारे साथ होता तो फिर क्या होता?" मोहन, सुरेश और रमेश के यह सुनकर रोंगटे खड़े हो गये। उन्होंने सोहन को गले से लगा लिया और कसम खायी कि, "आज के बाद वह कभी बिना जाने-समझे कहीं भी पानी में नहीं नहायेंगे।" तीनों मित्रों ने उन लोगों का आभार व्यक्त किया और अपने-अपने कपड़े पहनकर सोहन के साथ घर की तरफ चल दिए।

संस्कार सन्देश

हमें बिना जाने-समझे कभी भी गहरे पानी में नहीं नहाना चाहिए।

लेखक

जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिकारी

सड़क किनारे दो बड़े पेड़ लगे थे। एक पेड़ पर कोयल और दूसरे पेड़ पर कबूतर रहता था। दोनों आपस में बहुत बातें करते थे, इसलिए मित्रता दिन पर दिन गहरी होती जाती थी।कोयल अमरूद के पेड़ पर अकेली रहती थी। उसका सारा परिवार प्राकृतिक आपदा में मर चुका था। कबूतर जामुन के पेड़ पर रहता था। उसका पूरा परिवार शहरी शिकारी का शिकार हो गया था। कोयल और कबूतर सुबह सवेरे उठकर भोजन के तलाश में जाते और शाम होते ही वापस आ जाते थे, फिर जो बचता, दोनों आपस में मिल जुलकर खाते और खूब बाते करते।

एक दिन की बात है। दोनों भोजन की तलाश में प्रतिदिन की तरह बाहर गये। कोयल को बहुत सारा भोजन एक स्थान पर दिखा। वह तुरन्त भोजन खाने लगी, तभी शिकारी ने कोयल को एक टोकरी में बन्द कर दिया। कबूतर ने जैसे ही देखा कि मित्र कोयल शिकारी की बाँधी हुई टोकरी में बन्द हो गई है, वह तुरन्त उसे छुड़ाने का प्रयास सोचने लगा, पर शिकारी टोकरी के पास ही बैठ गया। इससे पहले की शिकारी टोकरी खोलकर कोयल को पकड़ता, शिकारी के मोबाईल की घन्टी बज गयी। वह कान में मोबाइल लगाकर किसी से बात करने में व्यस्त हो गया। कबूतर मौके की तलाश में ही पास की झाड़ियों में छिपा था। चुपके से आकर उसने टोकरी थोड़ा अपनी गर्दन की सहायता से उठायी। कोयल टोकरी से बाहर आ गयी। दोनों जल्दी से उड़ गये। शिकारी देखता ही रह गया।

संस्कार सन्देश

हमें हर हाल में अपने मित्रों की सहायता करनी चाहिए।

लेखिका
शमा परवीन
बहराइच (उत्तर प्रदेश)

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक -19.10.2024
190

बाल कहानी

समझदारी

दीपावली आने वाली थी। गाँव में जोर-शोर से तैयारियाँ चल रही थीं। मीना ने भी अपने कच्चे घर को गोबर से लीपकर बहुत ही सुन्दर सफेद रंगोली के साथ सजाया था। झोंपड़ी में लेटे हुए मीना के दादाजी की तबीयत सही नहीं थी। उनको खाँसी आ रही थी और बुखार भी था। मीना के दादाजी ने कहा, "बेटी मीना! दीपावली आ रही है, तुमने अपनी गुल्लक को तोड़कर देखा, कितने पैसे हो गये हैं? दीपावली पर उन्हीं पैसों से तुम पटाखे लाओगी।" मीना ने कहा, "दादाजी! दीपावली से एक दिन पहले मैं गुल्लक तोड़ूँगी। मैंने उसमें काफी पैसे जमा कर लिए हैं। कम से कम ...... पाँच सौ होंगे।" मीना बहुत खुश थी, परन्तु दीपावली के एक दिन पहले अचानक दादाजी की तबीयत ज्यादा खराब हो गयी। उन्हें साँस लेने में तकलीफ होने लगी। मीना के पिताजी उन्हें तुरन्त अस्पताल लेकर गये। डॉक्टर ने उन्हें दवाई दी और कहा, " दीपावली के पटाखे के धुएँ से उन्हें दूर रखना है, नहीं तो उन्हें साँस लेने में दोबारा दिक्कत होने लगेगी।" मीना के पिताजी दादा जी को घर लेकर आ गये। पिताजी ने मीना को सारी बातें बतायीं।मीना ने मन ही मन फैसला लिया कि, वह इस बार दिवाली पर पटाखे नहीं चलायेगी। घर में धुएँ से दादाजी की तबीयत खराब हो जायेगी। दीपावली के दिन मीना ने अपनी गुल्लक तोड़ी। उसमें पाँच सौ रुपये निकले। मीना अपने पिताजी के साथ बाजार गयी और उन पैसों से अपने दादाजी के लिए कम्बल लेकर आयी। मीना ने दादाजी को कंबल दिया। मीना ने कहा, "दादाजी! यह दिवाली का तोहफा आपके लिए है। सर्दी आने वाली है।" मीना ने कहा, "दादाजी! पटाखे फोड़ने से कुछ नहीं मिलता। इस कम्बल से आपको सर्दी नहीं लगेगी और यह हमेशा आपके काम आयेगा।" दादाजी ये बात सुनकर भावुक हो गये। उन्होंने अपनी बेटी को गले लगा लिया। शाम को मिट्टी के दीए जलाकर दादा जी और मीना ने मिलकर खुशियाँ मनायीं।

संस्कार सन्देश

"हमें फालतू की फिजूल खर्ची नहीं करनी चाहिए और समय के अनुसार निर्णय लेना चाहिए।"

कहानीकार-
शालिनी (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय- रजवाना
सुल्तानगंज मैंनपुरी (उ०प्र०)

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 21/10/2024
191

बाल कहानी

उल्लू

"पिता जी! ये पेड़ पर कौन बैठा है? "उल्लू है।" पिताजी ने बताया।
"जाइए, पिता जी! मैं आपसे बात नहीं करूँगा। आप भी मेरे मित्रों की तरह मुझे उल्लू कह रहे हैं। मैं माँ के पास जा रहा हूँ।" पिता जी ने हँसते हुए रोहन को गोद में उठाकर कहा, "मेरे लाडले पुत्र! मैं तुम्हें उल्लू नहीं कह रहा हूँ। तुम तो बहुत प्यारे और होनहार हो।"

रोहन इससे पहले कुछ कहता, माँ छत पर आ गयी और बोली, "आप दोनों यहाँ हो, मैं कब से आवाज लगा रही हूँ आप दोनों को। खाना परोस दिया है, आकर खा लो। रात बहुत हो गयी है। सुबह रोहन को स्कूल भी जाना है।"
पिता जी बोले, "मैं आ ही रहा था रोहन को लेके, पर रोहन हमसे नाराज हो गया है।"
"क्या हुआ रोहन बेटा! तुम पिता जी से क्यों नाराज हो गये हो, क्या बात है? मुझे बताओ।" माँ ने पूछा।
माँ! वह देखो, उस डाल पर क्या बैठा है?" रोहन ने वही प्रश्न पूछा।

माँ ने गौर से देखा और कहा, "उल्लू है।"
"माँ! आप भी मुझे उल्लू कह रही हैं?" रोहन फिर बोला।
"नहीं बेटा! मैं तुम्हें नहीं, उल्लू को उल्लू कह रही हूँ।" माँ का वही जबाब सुनकर रोहन गुस्सा होकर ये कहकर छत से नीचे आ गया कि, "आप दोनों एक ही तरह हो। मैं आप दोनों से बात नहीं करूँगा।" रोहन अपने कमरे में जाकर लेट गया। माँ और पिता जी ने बहुत समझाया, पर रोहन ने खाना नहीं खाया।
सुबह होते ही रोहन समय से उठा। तैयार होकर स्कूल जाने के बैग उठाया। माँ ने नाश्ता लगाया, टिफिन रखा, पर रोहन ने नहीं खाया। रोहन के माता-पिता रोहन के गुस्से के आगे बेबस हो गये। वे बहुत दु:खी हुए।
रोहन स्कूल पहुँच गया। क्लास में टीचर रोचक जानकारी और गतिविधि करा रही थी। बच्चों को खड़ा करके प्रश्न भी पूछ रही थी।
कुछ देर बाद टीचर ने सभी बच्चों के हाथ में एक चित्र दिया और कहा, "जिसके हाथ में जो चित्र आयेगा बच्चों! आपको उस चित्र का नाम और उससे सम्बन्धित जानकारी साझा करनी होगी। जिस बच्चे का जवाब सही होगा, उसको पुरस्कार मिलेगा।"
सभी बच्चे एक-एक करके उत्तर देने लगे। जब रोहन ने चित्र देखा तो खामोश हो गया और रोने लगा। तभी टीचर ने रोहन के हाथ से चित्र ले लिया और बोली, "ये तो उल्लू है। इसमें रोने वाली क्या बात है?" रोहन फिर भी न चुप हुआ तो टीचर ने रोने की वजह पूछी! रोहन बोला, "मैंमजी! ये बताएँ, सब लोग मुझे उल्लू क्यूँ कह रहे है?" टीचर ने प्यार से समझाया कि, "इस चित्र में जो बना है, ये उल्लू है, न कि तुम। जैसे तुम्हारा नाम रोहन है, वैसे इसका नाम उल्लू है।"
रोहन को बात समझ आ गयी और अपने किए पर बहुत शर्मिन्दगी महसूस हुई। छुट्टी होते ही वह घर पहुँचा। घर पहुँचते ही माँ के गले लग गया और अपने गुस्से के लिए माफी माँगी। माँ ने रोहन को समझाते हुए माफ कर दिया। थोड़ी देर में पिता जी भी आ गये। सबने मिलकर खुशी-खुशी खाना खाया। रोहन ने पिताजी से भी माफ़ी माँगी और वादा किया कि, "अब कभी गुस्सा नहीं होऊँगा। मैं अच्छा इन्सान बनूँगा।

संस्कार सन्देश- स्थिति कुछ भी हो, हमें सदैव धैर्य रखना चाहिए। गुस्सा नहीं करना चाहिए।

कहानीकार-
शमापरवीन
बहराइच (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।
shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 22/10/2024
192
बाल कहानी

हठ

कहानियों को सुनने/पढ़ने से हमारे भाषा विकास को बढ़ावा मिलता है। तो आइये चलते हैं आज की बाल कहानी की ओर👉

रामपुर गाँव में श्याम नाम का आदमी रहता था। वह रोजाना जंगल से पक्षियों को पकड़कर लाता था और बाजार में उन्हें अच्छी कीमत लेकर बेंच देता था। उसकी एक बेटी थी, जो अपने पिता को पिंजड़े से पक्षियों को अन्दर-बाहर करते देखती रहती थी।

एक दिन वह अपने पिताजी से जिद कर बैठी, "पिताजी! मुझे भी पिंजड़े के अन्दर रहना है।" उसके पिता ने समझाने की बहुत कोशिश की, पर वह नहीं मानी । वह बार बार रट लगा बैठी रही कि, "मुझे भी पिंजड़े के अन्दर रहना है पिताजी" हठ के कारण उसने खाना-पीना तक छोड़ दिया। हारकर उसके पिताजी को एक पिंजड़ा मँगवाना पड़ा। पिंजड़े को देखकर उसकी बेटी बहुत खुश हो गयी और पिंजड़े में जाकर बैठ गयी। वह अपने पिता से बोली , "पिताजी! मुझे भी पिंजड़े में खाना दो।" पिताजी बोले, "तुम ऐसा क्यों कर रही हो बिटिया?" वह बोली, "जिस तरह इन्सानों को अपनी जिन्दगी जीने का अधिकार है, उसी तरह पक्षियों को भी खुली हवा में उड़ने का अधिकार है।" श्याम अपनी बेटी की इतनी समझदारी भरी बातें सुनकर बहुत शर्मिन्दा हुए।उस दिन से उन्होंने पक्षियों को पकड़ना बन्द कर दिया ।

संस्कार सन्देश-

हमें जीव-जन्तुओं पर दया करनी चाहिए और उनकी रक्षा करनी चाहिए।

कहानीकार-
दिव्या (कक्षा- 7)
कम्पोजिट विद्यालय पहरवापुर
विकासखण्ड- मलवॉं

शिक्षा का उत्थान
मिशन शिक्षण संवाद
शिक्षक का सम्मान

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 23/10/2024
193

बाल कहानी

नेकी का फल

राधा कक्षा सात की होनहार छात्रा थी। वह प्रतिवर्ष अपनी कक्षा में प्रथम आती थी। साथ ही साथ खेलकूद में भी आगे रहती थी।
स्कूल के सभी अध्यापक उसकी सराहना करते थे, जिसके कारण इसकी सहेलियाँ उससे चिढ़ती थीं। राधा के माता-पिता बहुत गरीब थे। वे मजदूरी करते थे। वह अपने माता-पिता की तीसरी सन्तान थी। गरीबी के कारण राधा अपनी पढ़ाई पर विशेष ध्यान देती थी।
वार्षिक परीक्षा का समय चल रहा था। राधा साइकिल पर बैठकर अपने स्कूल को जा रही थी। रास्ते में वह देखती है कि एक बुजुर्ग महिला चक्कर खाकर गिर पड़ी है। राधा तुरन्त अपनी साइकिल खड़ी करके उसके पास जाती है और उसे पानी पिलाकर छाया में बैठाती है।
तभी पीछे से आ रही राधा की सहेलियाँ मौका पाकर उसके साइकिल की हवा निकाल देती है। ये सारी घटना उनके प्रधानाध्यापक ने देख ली थी।
जब राधा वापस आती है तो साइकिल पन्चर देखकर परेशान हो जाती है। फिर बिना देर किए स्कूल के लिए चल पड़ती है।
परीक्षा शुरू हो चुकी थी। राधा जैसे-तैसे जल्दी से अपना पेपर पूरा करती है। यह देखकर इसकी सहेलियाँ उस पर हँसती हैं।
जब परीक्षा का रिजल्ट आता है तो राधा फिर कक्षा में प्रथम आती है। प्रधानाध्यापक सभी को बुलाकर राधा को पुरस्कृत करते हैं। वे सभी के सामने राधा की देर से आने का कारण बताते हैं। सारे बच्चे राधा को बधाई देते हैं। राधा को नेकी का फल मिल चुका था। इसकी सहेलियाँ अपने किए की माफी माँगती हैं।

संस्कार सन्देश-

हमें दूसरों की परवाह किए बिना लगातार अच्छे कार्य करते रहना चाहिए।

कहानीकार-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
ब्लॉक-अमरौधा (कानपुर देहात)

shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 24-10-2024
194

बाल कहानी — भविष्य की चिंता

निहाल सिंह एक धनी व्यक्ति था। उसके पास वावन बीघा जमीन थी। निहालसिंह के पिता एक सरकारी स्कूल में अध्यापक थे। अब वह रिटायर हो चुके हैं। उनके अधिक लाड-प्यार की बदौलत उनका बेटा पढ़ न सका था। निहालसिंह को रोज अपने पिता से मुँह-माँगे रुपये मिलते और वह अपने मित्रों के साथ दिन-भर खाता-पीता रहता और खेलता। लोगों के पूछने पर वह कहते, "बेटे को पढ़ा-लिखाकर क्या करना है? नौ पास कर ली, बहुत है। हिसाब-किताब में कच्चा तो नहीं है?"

यह सुनकर कोई कुछ न कहता। समय गुजरता गया। निहालसिंह की एक सम्पन्न परिवार में शादी हो गयी। उसकी पत्नी का नाम दीपिका था। वह सभी गृह कार्यों में कुशल थी। वह विनम्र स्वभाव की थी, इसलिए कुछ ही दिनों में उसने सभी का मन जीत लिया था। सभी बहुत खुश थे।

समय और गुजरा। दो साल बाद दीपिका ने निहालसिंह के बेटे को जन्म दिया। खुशियाँ मनायीं गयीं।

कुछ समय और गुजरने पर दीपिका ने निहालसिंह के दूसरे बेटे को जन्म दिया। दो बेटों को पाकर दादा-दादी और माता-पिता ने तो जैसे पूरे जीवन का सुख भोग लिया। दोनों बच्चे नील और अम्बर बड़े हुए। वे दोनों स्कूल जाने लगे, किन्तु दादाजी के अत्यधिक लाड-प्यार ने उन्हें भी लापरवाह और निकम्मा बना दिया। निहालसिंह खेती के काम और देख-रेख में व्यस्त रहता था। उसे अपने पिता पर पूरा भरोसा था कि वह अपने नातियों को अच्छी शिक्षा और संस्कार देंगे, किन्तु उसका यह विश्वास चकनाचूर हो गया। निहालसिंह की तरह अपने नातियों को वह रुपये देकर कहते कि, जाओ, खाओ-पियो-खेलो और मौज-मस्ती करो।"

दोनों नाती दिन-भर खेलते-रहते और इधर-उधर घूमते। लोगों के पूछने पर उन्होंने फिर वही जबाब दिया, "अरे! आप लोग क्यों परेशान होते हैं। नाती मेरे हैं। क्या मुझे उनकी चिन्ता नहीं है? नाती मुझे बहुत प्यारे हैं। यह हमारे ही पास रहेंगे। इन्हें पढ़ा-लिखाकर क्या करना है? हमारे पास किस चीज की कमी है? मैं अपने नातियों को आँखों से ओझल नहीं करूँगा। जमीन और इतना नौकरी का पैसा कहाँ जायेगा, इन्हीं के लिए ही तो है।" लोग सुनकर चुप हो जाते। निहालसिंह तक भी ये बात पहुँची तो पिता के सामने कुछ भी कहने की उसकी भी हिम्मत न हुई। दीपिका बहू ने दादी को उलाहना दी, किन्तु दादी के कहने पर कोई हल न निकला। दोनों नाती केवल कक्षा आठ तक ही पढ़ सके। बड़े होकर वे वैसे ही बने रहे।

दादा-दादी अब गुजर चुके थे। दोनों नाती आवारा होने के कारण खेती के कार्य में भी हाथ नहीं बँटाते थे। निहालसिंह भी अब शरीर से अशक्त हो चुका था। उसने जमीन कटती पर दे दी। बच्चे बड़े हो चुके थे। निहालसिंह को उनकी शादी की चिन्ता होने लगी। बच्चों को ईश्वर के भरोसे छोड़कर निहालसिंह कटती से मिले रुपये से आराम से जीवन-यापन करने लगा।

संस्कार सन्देश

हमें अपने बच्चों को पढ़ा-लिखाकर संस्कारयुक्त बनाना चाहिए अन्यथा वह अपने सही मार्ग से भटक जाते हैं।

लेखक

जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि० बम्हौरी (कम्पोजिट)
मऊरानीपुर, झाँसी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान

shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 25.10.2024
195
बाल कहानी

दुनियादारी

हरिमोहन एक होनहार लड़का था। अपनी पढ़ाई पूरी करने के बाद हरिमोहन ने सोचा कि अब नौकरी की तैयारी कर ली जाये। हरिमोहन के पिता सरकारी सेवा में थे। अब वे सेवानिवृत हो चुके थे। हरिमोहन के तीन बहनें थीं। वह अकेला भाई था। हरिमोहन ने सोचा कि पिताजी की पेंशन से घर का गुजारा मुश्किल से हो पाता है। अब तो बहनों की शादी करने का भी वक्त आ गया है। हरिमोहन बाहर जाकर नौकरी की लिए तैयारी करना चाहता था, किन्तु पैसे के अभाव में वह मजबूर था। अतः हरिमोहन ने घर में ही रहकर पढ़ाई करनी शुरू कर दी, ताकि सरकारी सेवा में चयन हो सके। हरिमोहन के घर जो भी आता था, वह व्यक्ति यही कहता था कि, "तुम कुछ काम क्यों नहीं करते हो, क्या तुम्हें घर की चिन्ता नहीं है, अपनी बहनों की चिन्ता नहीं है?" हरिमोहन ने कई बार समझाया कि, "वह लगातार प्रयास कर रहा है, कि उसका कहीं सरकारी सेवा में चयन हो जाये।" पर लोग कहते थे, "अरे! ऐसे कुछ नहीं होता है, तुम मेहनत नहीं कर रहे हो। कुछ और काम कर लो।" हर व्यक्ति हरिमोहन को नाकारा समझता था कि वह घर में पिताजी के पैसों पर पल रहा है, पर हरिमोहन ने किसी भी व्यक्ति की बात को अपने दिल से नहीं लगाया। लगातार मेहनत करने के कारण हरिमोहन का चयन अन्त में पुलिस में हो गया। अब वही लोग तुरन्त आकर हरिमोहन को बधाई देने लगे और उनके पिताजी से बोले, "तुम्हारे बेटे ने बहुत मेहनत की है। बेटा! तुमने बहुत मेहनत की है। बेटा! हमारी भी कुछ मदद कर दिया करना।" हरिमोहन आश्चर्यचकित था, जो लोग कल उसके लिए नकारात्मक बातें कर रहे थे, आज इतनी सकारात्मक बातें कर रहे हैं। हरिमोहन के पिताजी बोले, "बेटा! दुनिया का काम नीचे गिराना है, हमें उनकी बातों पर ध्यान न देकर अपना काम करना चाहिए। अगर तुमने उनकी बातों पर ध्यान दिया होता तो आज तुम पुलिस में नहीं होते।" हरिमोहन ने कहा, "जी पिताजी!" पिताजी ने कहा, "हारा वही है, जो लड़ा नहीं।" चलो बेटा! तुम्हें तो आगे बहुत लड़ाई लड़नी है, और ऐसा कहकर दोनों पिता-पुत्र खाना खाने चले गये।

संस्कार सन्देश

"हमें लोगों की बातों में नहीं आना चाहिए,बल्कि अपने प्रयास जारी रखने चाहिए।"

कहानीकार-
शालिनी (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय- रजवाना
सुल्तानगंज मैंनपुरी (उ०प्र०)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।
shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक -26.10.2024
196

बाल कहानी

बहादुर बनो

नियाज कक्षा 6 का विद्यार्थी था। नियाज पढ़ने-लिखने में बहुत होशियार था। वैसे नियाज में बहुत सारी खूबियाँ थी। बस! एक ही कमी थी, नियाज जरा-जरा-सी बात पर परेशान हो जाता था और रोने लगता था। एक दिन की बात है, नियाज के पास दस रुपए थे। वह घर के पास एक दुकान पर गया। उसने दस रुपए का एक बिस्किट का पैकेट लिया। उसी वक्त नियाज का दोस्त सोनू भी एक पैकेट बिस्किट लेने आया।
नियाज दुकान पर दस रुपए रखकर बिस्किट उठाकर घर की तरफ जाने लगा और सोनू भी, तभी दुकानदार ने दोनों को रोका। सोनू झट से बोला, "चाचा! मैने दस का नोट दे दिया है।" इतना कहकर सोनू चला गया। नियाज बोला, "मैंने दस रुपए दिये हैं आपको।" दुकानदार ने नियाज के हाथ से बिस्किट का पैकेट छीनते हुए कहा, "पैसे लाओ! तब ले जाओ तुमने कोई पैसा नहीं दिया है! मुझे सिर्फ एक दस का नोट मिला है, जो सोनू देकर गया है। ये सुनकर नियाज रोने लगा और घर वापस आ गया। घर पर डाँट पड़ेगी, ये सोचकर नियाज ने किसी से कुछ नहीं कहा पर नियाज को तकलीफ थी कि वह सच को साबित नहीं कर पाया। वह तकलीफ में था। तभी उसकी अम्मी को शक हुआ कि कोई बात जरूर है। उन्होंने कई बार पूछा तो नियाज ने सारी बात बता दी।कुछ देर बाद इत्तेफाक से सोनू नियाज के घर नियाज़ को बुलाने आ गया कि, "आओ! चलें, आज इतवार का दिन है। पास में मेला लगा है। चलो! चलके टहल आते हैं। सब लोग आ-जा रहे हैं।" नियाज ने साफ मना कर दिया, "मैं नहीं जाऊँगा।" तभी नियाज की अम्मी बोल उठी, "क्यों नहीं जाओगे? चलो, मैं तुम दोनों को मेला दिखा लाती हूँ। पर पहले तुम दोनों नाश्ता कर लो। ये देखो- मैंने मेज पर नाश्ता लगा दिया है।" इतना लजीज नाश्ता देख सोनू इनकार न कर सका। सब ने भरपेट नाश्ता खाया और मेले की तरफ चल दिए। नियाज की अम्मी ने नियाज और सोनू को बराबर से खिलाया-पिलाया। खिलौना दिलाया। जब वापस होने लगे तो मोहल्ले की उसी दुकान पर दोनों के लिए दस रुपये वाले दो पैकेट बिस्किट बीस रुपए का लिया और दोनों बच्चों को एक-एक बिस्किट पकड़ा दिया। तभी दुकानदार बोला, "बहनजी! बुरा नहीं मानना, ये आपका बेटा चोर है। बिना पैसे दिए आज सुबह ही बिस्किट लेके भागा जा रहा था। इससे पहले कोई कुछ जवाब देता, नियाज रोने लगा। सोनू से रहा नहीं गया, वह बोल उठा, "चोर नियाज नहीं, मैं हूँ। मैंने आपको पैसा नहीं दिया था। ये लीजिए.. यही बिस्किट था। आप रख लीजिये।" फिर सोनू ने नियाज से कहा, "तुम मुझे माफ कर दो, पर दोस्त! तुम बहादुर बनो। अपने सच को साबित करना सीखो। रोना कायरों का काम है।" सोनू ने नियाज की अम्मी और दुकानदार से भी माफी माँगी। सभी ने सोनू को माफ कर गले से लगा लिया। नियाज ने सबसे और खुद से वादा किया कि, "अब वह छोटी-छोटी बात पर रोयेगा नहीं, बल्कि हर मुश्किल को सोच-समझ कर हल करेगा।

संस्कार सन्देश

हमें हर हाल में मुश्किल का सामना समझदारी से करना चाहिए। छोटी-छोटी बातों पर रोना नहीं चाहिए।

लेखिका

शमा परवीन
बहराइच (उत्तर प्रदेश)

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 28/10/2024
197

बाल कहानी

मोर और पंख

नेवेली नामक गाँव में बहुत सारे मोर रहते थे। वह मोर दिन में मोनू की छत पर रोज आते थे। आते भी क्यों ना हो, क्योंकि उनके दादाजी रोज मोर के लिए छत पर दाने डालते थे। मोर खूब चाव से आकर दानों को खाते थे और फिर खूब मजे से पानी पीते थे। कुछ देर बाद वे उड़ जाया करते थे। मोनू ने एक दिन देखा कि इतने सुन्दर-सुन्दर मोर जिनके कितने सुन्दर पंख है! क्यों न इसके पंख हम तोड़ लेते हैं!

बस! फिर क्या था? एक दिन उसने जब मोर को आते देखा तो उनके पास गया और धीरे से उनके सारे पंख पकड़ लिए। अब मोर ने पंख को बहुत छुड़ाने की कोशिश की। जब वह पंख को नहीं छुड़ा पाये तो पंख छोड़कर ही उड़ गए। अब मोनू को बड़ा मजा आया और उसने वह पंख जाकर गाँव में दूसरे लोगों को कुछ पैसों में बेच दिए। अब मोनू को जब मोर के पंख बेचने से जो पैसे मिले तो उसे बड़ा मजा आया कि अब तो मेरे पास इतने सारे पैसे हो गए। अब उसे लालच आ गया। वह रोज ऐसा ही करने लगा। रोज मोर के पंख पकड़ता और मोर जो पंख छोड़कर उड़ जाते, मोनू जाकर बाजार में जाकर उन पंख को बेच देता। उसने तो अपना रोज का ऐसा धन्धा बना लिया।

अब उसकी एक दिन उसके दादाजी ने जब देखा तो उन्होंने मोनू को बुलाकर कहा, "बेटा! यह गलत बात है। तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए। मोर को भी तकलीफ होती है, जब वह पंख छोड़ करके उड़ते हैं, क्योंकि उन्हें अपनी जान बचानी होती है। वह छोड़कर के पंख उड़ जाते हैं लेकिन हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। मोनू को बात समझ में नहीं आयी।

एक दिन ऐसा ही हुआ कि मोनू रास्ते में जा रहा था और साइकिल के पहिए में उसका पैर फँस गया। अब जब पर फँस गया तो बहुत छुड़ाया लेकिन वह नहीं निकल पाया। उसके दादाजी भी साथ में थे। वे बोले, "क्यों ना अब इस पैर को हम काट दे और फिर घर चलते हैं।" मोनू ने कहा, "दादाजी! ऐसा मत करिए, मेरे पैर कट जायेंगे, तो फिर मैं चलूँगा कैसे?" दादाजी ने कहा, "देखा! अब तुम्हें समझ में आया? शरीर के अंग को काटने में या तोड़ने में कितना कष्ट होता है, ऐसे ही मोर को भी कष्ट होता है। तो आज से हम ऐसा काम नहीं करेंगे और ना ही तुम ऐसा काम करोगे।" मोनू को बात जल्दी समझ में आ गयी और उसने भगवान से भी क्षमा माँगी और दादाजी से भी वादा किया कि, "अब आज से वह ऐसी कोई भी गलत काम नहीं करेगा।"

संस्कार सन्देश- अकारण हमें किसी भी प्राणी को बंधक नहीं बनना चाहिए नहीं तो एक दिन ऐसा हमारे साथ भी होता है।

कहानीकार-
अंजनी अग्रवाल
उच्च प्राथमिक विद्यालय सेमरूवा
सरसौल कानपुर नगर (उत्तर प्रदेश)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।
shikshansamvad@gmail.com 9458278429 https://www.missionshikshansamvad.com
https://www.shikshansamvad.blogspot.in https://www.facebook.com/shikshansamvad/

संस्कार संदेश
दैनिक नैतिक प्रभात
दिनांक 29/10/2024
198

बाल कहानी
बड़ों की सीख

आज राजू अपनी डॉक्टर की पढ़ाई पूरी करके घर वापस आता है। आते ही वह सबसे पहले जाकर पिताजी के पैर छूता है। पिताजी प्यार से उसे गले लगा लेते हैं। तभी वह अपने बचपन की यादों में खो जाता है। बचपन में राजू को सभी बहुत प्यार करते थे। दादी-दादा का वह लाडला था, पर सभी के लाड-प्यार ने दादी राजू को बिगाड़ दिया था।
मम्मी राजू को समय पर विद्यालय भेजती थी। पापा राजू को स्कूल बस तक छोड़ते हुए अपने ऑफिस के लिए निकल जाते थे, पर राजू स्कूल न जाकर अपने दोस्तों के साथ में खेलने निकल जाता था और देर से स्कूल पहुँचता था।
एक सप्ताह का समय बीत चुका था। अध्यापक के पूछने पर राजू ने बताया कि दादी माँ बहुत बीमार हैं। वह अस्पताल में एडमिट हैं। वह उन्हें देखने जाता है इसलिए विद्यालय समय पर नहीं पहुँच पाता। राजू के पिताजी जब शाम को घर वापस आते हैं और स्कूल की पढ़ाई के बारे में पूछते हैं तो राजू कोई न कोई बहाना बनाकर उनसे झूठ बोल देता था।
एक दिन शाम को अचानक से राजू के कक्षा अध्यापक आ जाते हैं। राजू जैसे ही दरवाजा खोलता है तो अचानक उन्हें देखकर चौंक जाता है। तभी पीछे अपने पापा की आवाज आती है। वह उन्हें अन्दर बुलाते हैं और राजू को पानी लाने के लिए कहते हैं। अध्यापक उनसे दादी का हाल-चाल पूछते हैं। वे पापा को बताते हैं कि, "राजू ने उन्हें बताया था कि दादी की तबीयत बहुत खराब है और राजू जब पिछले दो दिन से विद्यालय नहीं आया तो मैंने सोचा कि खुद जाकर दादी का हाल-चाल पूछ लूँ।"
पिताजी को बात समझते देर नहीं लगती है। वह पूरा मामला जान जाते हैं और अध्यापक के जाने पर राजू को अपने पास बुलाते हैं। राजू को बड़े प्यार से समझाते हैं कि, "बेटा! समय बहुत अनमोल होता है। इसे हमें व्यर्थ में नहीं गँवाना चाहिए। अगर हम मन लगाकर निरन्तर मेहनत करते हैं, तभी हमारा भविष्य सुनहरा रहता है। हमें कभी भी झूठ नहीं बोलना चाहिए।"
राजू अपने किए पर शर्मिंदा था। उसने अपने पिताजी से वादा किया कि, "वह भविष्य में कभी भी समय व्यर्थ में नहीं गँवायेगा और मेहनत और लगन से पढ़ाई करेगा तथा हमेशा सच बोलेगा।" उसका यह संकल्प देखकर उसके पापा बहुत प्रसन्न हुए।
आगे चलकर बचपन की इस सीख से राजू आज डॉक्टर बन पाया था। बचपन की यादें राजू को चेहरे पर मुस्कान ला रही थीं।

संस्कार सन्देश- हमें समय का सदुपयोग करना चाहिए। पूरी मेहनत और लगन से अपनी पढ़ाई कर हमेशा सच बोलना चाहिए।

कहानीकार-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
ब्लॉक-अमरौधा (कानपुर देहात)